

स्कूल में दृश्यकला–शिक्षण

राधिका नीलकान्तन

यह लेख लिखते हुए मैं कुछ प्रश्न रख रही हूँ और उनके कुछ सम्भावित उत्तर भी।

मैं कला–शिक्षण क्यों करती हूँ?

मैं कला–शिक्षण इसलिए करती हूँ कि प्रकाश, रंग, रूप–आकार, गठन, लकीरों और ब्रुश चलाने का मुझ पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता है कि मैं अपनी खुशी और अनुभव को बच्चों के साथ साझा करना चाहती हूँ।

एक बच्चे को कला क्यों अपनानी चाहिए?

इस बारे में कई सिद्धान्त हैं। माना जाता है कि दृश्य और मंच कलाओं से अकादमिक कौशलों में बेहतरी आती है। मैं नहीं जानती कि यह सही है या नहीं लेकिन इससे कला–कौशलों में तो यकीनन बेहतरी होती है! कला कौशलों को मापा नहीं जा सकता। "कला बुद्धि" में कई तरह के कौशल शामिल हो सकते हैं जिनका एक स्वस्थ, विवेकी जीवन के लिए होना आवश्यक है। यह बात शायद स्वयं में प्रकट न हो लेकिन शिक्षा में कला के महत्त्व को जानने के लिए किसी प्रकार के आँकड़ों पर आधारित प्रमाण की जरूरत नहीं है। एक बच्चे को कला अपनानी चाहिए क्योंकि यह एक खूबसूरत काम है।

मैं कला कैसे सिखाती हूँ?

एक अभ्यासी कलाकार के तौर पर निरन्तर कला–शिक्षण से अपने काम और अपने काम से कला–शिक्षण की ओर आना मेरे लिए बहुत ही ताजगी भरा रहता है। कला और बच्चों का मेल बहुत ही कमाल की चीज है। दोनों एक–दूसरे को कुछ देते हैं और दोनों के बीच एक खास तरह का तारतम्य और सहजता होती है।

व्यावहारिकता की बात करें तो शिक्षक को कई काम एक साथ करने चाहिए (जैसे, पेन्सिल बनाते–बनाते कक्षा को भी देखना और ऐसा करते हुए किसी बात पर अटक गए बच्चे की मदद को भी आना)। सब प्रकार के विद्यार्थियों के साथ प्रभावशाली सम्पर्क में आना जरूरी है। शिक्षक को इसे अपनी प्राथमिकता बनाना होगा।

गतिविधियाँ तो आम–सामान्य हो सकती हैं लेकिन उनके पीछे के विचारों में एक खास तरह की तरलता होनी चाहिए। मैंने यह तय नहीं कर रखा कि किस कक्षा के साथ क्या करूँगी लेकिन इतना जरूर कह सकती हूँ कि उनके सम्पूर्ण अकादमिक सफर में कई तरह के विचारों से उनका परिचय करवाया जाता है ताकि एक सन्तुलन बना रहे। जो बात एक समूह के साथ सफल होती है, जरूरी नहीं कि वह उसी समय अन्य के साथ भी कामयाब होगी। इसलिए मैं शुरुआत वहाँ से करती हूँ जहाँ तक वे पहुँच चुके होते हैं। पहले महीने में तो मैं उनसे चर्चा करती हूँ कि वे क्या करना चाहेंगे। आमतौर पर मैं पूरे साल में करवाए जाने वाले काम की शुरुआत यहीं से करवाती हूँ।

जब शुरू–शुरू में बच्चा ऐसे चित्र बनाता है जिन्हें हम पहले से प्रचलित या घिसा–पिटा भी कह सकते हैं, तो मैं उससे कहती हूँ कि वह किसी चीज को एक खास अन्दाज में बस एक बार ही बना सकता है। कक्षा की शुरुआत में हम समूह चर्चाएँ करते हैं। इससे प्रत्येक बच्चे को अन्य बच्चों के विचार सुनने का मौका मिलता है और दूसरों को सुनते हुए अपने विचारों में परिवर्तन लाने का भी। चर्चा के बाद बच्चे का सृजनात्मक जादू अपने रंग में आता है और चल निकलता है। उसके बाद शिक्षक को बहुत कम ही कुछ करना पड़ता है।

हम आमतौर पर साल की शुरुआत रेखाचित्रों से करते हैं और साल का अन्त भी। प्रत्येक बच्चे का एक साथी उसके साथ इस चित्र के लिए मॉडल के रूप में बैठता है। आकार, रेखा और रंग को अहमियत दी जाती है, "आँखों" या "नाक" को नहीं। मैंने पाया है कि इससे तुरन्त वह समझ बनती है जो बच्चे को सही प्रकार के अपेक्षित अवलोकन की ओर ले जाती है। मैं इस बात के महत्त्व पर बल देती हूँ कि बनाए जा रहे चित्र की विषयवस्तु की ओर अधिक ध्यान दिया जाए न कि बनाए जा रहे रेखाचित्र पर। ध्यानपूर्वक अवलोकन हो रहा हो तो वही मेरी सन्तुष्टि के लिए बहुत है।

मैं कला–कक्ष को अत्यधिक कला–सामग्री से भरा नहीं रखती। चीजें जरूरत के मुताबिक उचित मात्रा में मँगवाई और सावधानीपूर्वक प्रयोग में लाई जाती हैं। मेरी कोशिश रहती है कि बच्चों में यह ध्यान रखने की भावना पैदा हो कि कम से कम चीजें व्यर्थ जाएँ।

मैं बच्चों को किसी निर्धारित समय में काम समाप्त करने को नहीं कहती। समय को मैं तब ही बीच में लाती हूँ यदि वे अपने काम पर ध्यान केन्द्रित न कर रहे हों। यदि वे बीच में कुछ समय का विराम लेना चाहते हैं तो ले सकते हैं, लेकिन नया काम शुरू करने से पहले एक काम को समाप्त करना ही होता है। कभी–कभी वे कुछ नया भी शुरू कर सकते हैं मगर अधूरे रह गए काम को पूरा करने के लिए उस पर वापिस आना आवश्यक रहता है।

मैं यह तो नहीं कहूँगी कि मेरी कक्षा का वातावरण किए गए काम के बारे में कोई राय बनाकर फैसला देने वाला नहीं है, लेकिन यह बहुत प्यार से, नरमी के साथ किया जाता है। बहुत ही सहज वातावरण में, आराम से, हल्के–फुल्के अन्दाज में टिप्पणी की जाती है।

एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है सामग्री की व्यवस्था और विद्यार्थियों के काम को सम्भालकर रखने का। मैं इस काम में बच्चों को शामिल करती हूँ। जब बच्चों को इस बात का ज्ञान होता है कि चीजें कहाँ और कैसे रखी गई हैं तो उनसे यह उम्मीद भी की जा सकती है कि वे जगह को साफ–सुथरा रखेंगे। कला की कक्षा में सीखने और अनुभव में तीव्र, उत्सुक अवलोकन, देखने और स्थान–विषयक योग्यताएँ, चिन्तन, आत्मालोचना या मूल्यांकन और प्रयोगात्मकता शामिल हैं। कला का काम आमतौर पर कला–कक्ष में दीवारों पर प्रदर्शित किया जाता है। यह रसोई या पुस्तकालय जैसे सार्वजनिक स्थानों पर भी प्रदर्शित किया जाता है जहाँ अधिक संख्या में लोग इसे देख सकते हैं।

एक और महत्त्वपूर्ण बात बच्चों का परिचय पुराने और वर्तमान कलाकारों से, उनके काम से करवाने की है। कला–दीर्घाओं और संग्रहालयों में बच्चों को ले जाना भी उनकी शिक्षा का एक अहम हिस्सा है।

आखिर में सवाल यह भी है कि कला के लिए कितना समय समर्पित किया जाना चाहिए। कला तो हर समय उपलब्ध रहनी चाहिए। हम जो भी करें वह कला का एक नमूना ही हो!

__राधिका नीलकान्तन__ पिछले 19 साल से सेण्टर फॉर लर्निंग, बंगलौर में कला–अध्यापन कर रही हैं। उनका ई–मेल सम्पर्क neel.radhika@gmail.com है।
__अनुवादः__ रमणीक मोहन